ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के मांगलिक गीत एवं उनमें निहित शास्त्रीयता का महत्व

डॉ. संतोष पाठक
संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान

मनीषा भट्ट
शोधार्थी, संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सार-संक्षेप

संगीत कला का उद्गम भले ही मानव की सहज भावनाओं एवं प्रेरणाओं के अभ्यंतर हुआ हो। उसका विकास व पालन-पोषण संगीत की कोख में हुआ है। भारत देश विभिन्न संस्कृतियों का देश रहा है। भारतीय विद्वानों एवं मनीषियों ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। इसीलिए भारत में संगीत कला का अत्यधिक प्रचार-प्रसार हुआ। भारत का एक छोटा-सा राज्य उत्तराखण्ड जहाँ का संगीत पौराणिक पृष्ठभूमि में अपनी अलग छवि बनाये हुए हैं। उत्तराखण्ड प्राचीनकाल से ही धर्म भावनाओं में पुनीत क्षेत्र रहा है। लोकधुनों की एक अलग छटा है। यहाँ के मांगलिक गीतों में शास्त्रीय संगीत की झलक देखने को मिलती है। उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के मांगलिक लोकगीत एवं उनमें निहित शास्त्रीयता का विशेष महत्व है। हिन्दू धर्म में 16 संस्कारों को मान्यता प्राप्त है। गढ़वाल की अधिक जनसंख्या हिन्दू है। जीवन के मांगलिक पक्ष तथा संस्कारों से सम्बद्ध सभी लोकगीत जनपद गढ़वाल में मांगल कहलाते हैं। विवाह संस्कारों, पुत्र जन्म, इत्यादि अवसरों पर ये मांगलिक गीत गाये जाते हैं। जिनका महत्व गढ़वाल की संस्कृति में प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। वर्तमान में इन गीतों की छवि धूमिल हो रही है, जो चिन्ता का विषय है। अत: हमें उनका संरक्षण करना चाहिये। मांगलिक गीतों का हमारी संस्कृति में विशेष महत्व है, जिसका उल्लेख मैं अपने शोध पत्र में करूँगी।

शोध-पत्र

किसी भी प्रदेश या क्षेत्र की पौराणिक संस्कृति का अभिज्ञान वहाँ के गीतों के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है, ''लोकगीतों में ही हमारी सांस्कृतिक और पारिवारिक परिस्थितियाँ प्रखर रूप से उद्भाषित होती है। लोकगीतों के माध्यम से न केवल विभिन्न पारिवारिक सम्बन्धों का ज्ञान होता है वरन् लोकगीतों को लोगों के खान-पान, रहन-सहन, जीवन स्तर एवं आचार-विचार को ज्ञात करने का ''सेतु-बन्ध'' कहा जा सकता है।'' भारत वर्ष एक समृद्धशाली देश है, जो अपने विभिन्न संस्कृतियों के कारण विश्व में अपनी अलग छवि बनाये हुए हैं। उसी भारत देश का एक छोटा सा राज्य है ''उत्तराखण्ड'' जिसका नाम लेते ही देवभूमि के दर्शन होने लगते हैं। यह प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों का क्षेत्र रहा है जो वैदिक आर्यों की निवास स्थली के नाम से जानी जाती है। उत्तराखण्ड के दो खण्ड है, जो क्रमश: केदारखण्ड और मानसखण्ड कहे जाते हैं, उत्तराखण्ड के दो मण्डल हैं —

1. गढ़वाल मण्डल
2. कुमाऊँ मण्डल

उत्तराखण्ड के मांगलिक लोकगीत अत्यन्त प्रचलित है, जिन्हें वर्तमान समय में संजोने की आवश्यकता है। इन लोकगीतों में रागों की शास्त्रीयता प्राय: हमें देखने को मिलती है। यह लोकगीत प्राय: ताल में और रागों में बंधे हुए होते हैं। ''यहाँ अत्यन्त कष्टमय जीवन में भी संगीत तथा नृत्य की प्रधानता रही है, अथर्ववेद की पृथ्वी सूक्ति में लिखा है ''यस्याम नृत्यन्ति गायन्ति यैतवा'' अर्थात् यहाँ के मूल निवासी अपनी भूमि में ही नाच-गाकर अपना मनोरंजन करते हैं।'' ''गढ़वाल एवं कुमाऊँ के पर्वतीय लोकगीतों में हर युग के रंग, जन-मन रंजन की तरंग, सुख-दुख के अर्थ तथा जीवन के चिरनूतन पक्ष विद्यमान है, जिन्हें यहाँ की बालायें श्रमसाध्य कार्य करते हुए हुडक्या, हुडके की डुक-डुक पर, जागरी तथा धामी, डौर-थाली की डिम-डिम पर एवं औजी, ढोल-दमों की धिना-धिकडी-धिना पर गाते रहते हैं।

शैली, विषय, रस, उपलब्धि एवं तकनीकी आधार पर लोकगीतों को निम्नप्रकार विभाजित किया गया है—

1. संस्कार गीत (मांगल पूजा, आवहान तथा विवाह गीत)
2. झुमैलो (वेदना तथा प्रेमाभिव्यक्ति के गीत)
3. जागर गीत (देवताओं के जागरण गीत)
4. कृषि गीत (उत्तम फसल की कामना के लिए)
5. तन्त्र-मन्त्र के गीत
6. खुदेड़ गीत
7. बालगीत

इन गीतों के अतिरिक्त सामाजिक जनचेतना, जातियों के गीत तथा पट आदि गीत भी विषयानुकूल भिन्न-भिन्न रूपों में गाये जाते हैं।''

उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र की अधिक जनसंख्या हिन्दू है। यहाँ के निवासी हिन्दू धर्म एवं संस्कारों से बेहद लगाव रखते हैं ''यहाँ हिन्दू धर्म में प्रचलित 16 संस्कारों को मान्यता प्राप्त है। जो वर्तमान समय में अनेक संस्कारों के औचित्यहीन हो जाने के कारण इनको मात्र प्रतीकात्मक रूप में अपनाया जाता है।'' जो क्रमश: इस प्रकार है—

1. नामकरण संस्कार
2. यज्ञोपवीत संस्कार
3. विवाह संस्कार
4. मृतक संस्कार।

संस्कार, परिभाषा और प्रकार

''संस्कार'' हिन्दू या प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण अंग माने जाते हैं, ये आदिकाल से ही धार्मिक तथा सामाजिक एकता के प्रभावकारी माध्यम रहे हैं। कालक्रम के अनेक परिवर्तनों के साथ आज भी जीवित है। हिन्दू संस्कारों का वर्णन वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, इतिहास तथा धर्म-सूत्रों, स्मृतियों परवर्ती निबन्धों तथा प्रबन्ध ग्रन्थों में पाया जाता है। संस्कार हमारे सामाजिक तथा धार्मिक अनुशासन के सफल माध्यम है। ''संस्कार'' शब्द का अन्य भाषा में यथातथ्य अनुवाद करना असम्भव है। संस्कृत में ''संस्कार'' शब्द की व्युत्पत्ति समपूर्वक ''कृ'' धातु से ''घ'' प्रत्यय करके की गई है। (सम् +कृ + घ = संस्कार)

भाषा की दृष्टि से ''संस्कृति'' और 'संस्कार' सहोदर शब्द है। दोनों शब्द एक ही धातु (कृ) और उपसर्ग (सम) से बने हैं।''संस्कृति और संस्कार'' द्वारा ही मानव एवं अन्य प्राणियों में अन्तर किया जाता है। व्यक्तियों को संस्कृत करने के उद्देश्य से जो परम्परायें समाज द्वारा डाली गई, उन्हें ''संस्कार'' कहा गया है। इसका प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।''मनुस्मृति'' में जीवन यापन की रीति में दीक्षित होने के लिए ''संस्कार'' आवश्यक माने गये हैं। संस्कार न होने पर मनुष्य के पतित हो जाने की बात कही गई है।

जीवन के मांगलिक पक्ष तथा संस्कारों से सम्बद्ध सभी लोकगीत जनपद गढ़वाल में मांगल कहलाते थे, परन्तु आजकल विवाह के गीतों को मांगल गीतों के नाम से अधिक जाना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि विवाह संस्कारों को छोड़कर अन्य संस्कारों का प्रचलन समाप्त प्राय: हो गया है। फिर भी गढ़वाल में कुछ संस्कार ऐसे हैं जिनको सम्पन्न करते समय मंगल गीतों का गायन होता है। पौड़ी गढ़वाल के सबसे पुराने गीत सम्भवत: माँगल (मंगल गीत) ही है। वैदिक ऋचाओं की तरह इनमें भी देवी-देवताओं का आह्वान, स्तुति, मंगल कामना, आशीर्वाद आदि निहित है। इनमें प्राकृतिक शक्तियों की पूजा, पद-पद में जय और यश की कामना और कई स्थानीय देवताओं की स्तुतियाँ विद्यमान है। भारत की यह परम्परा रही है कि कोई भी काम करने से पूर्व मंगलाचरण होता है उसी प्रकार यही भावना इन सब गीतों में भी विद्यमान है। सभी मांगलिक कार्यों में माँगल गीतों का प्रयोग होता है। ''गढ़वाली लोकगीतों के वर्गीकरण का सर्वप्रथम उल्लेख सन् 1954 में श्री अबोध बन्धु बहुगुणा जी द्वारा संग्रहित ग्रन्थ ''धुयांल'' में प्राप्त होता है।'' इसमें बारह प्रकार के लोकगीत हैं।

गढ़वाल में शिशु जन्म सम्बन्धी अधिकांश गीत लुप्त हो चुके हैं किन्तु जो उपलब्ध हैं वे सम्भवत: अपनी भावनात्मक उपलब्धि के कारण ही सुरक्षित रह पायें हैं। बालक का जन्म प्राचीनकाल से ही पुण्य माना जाता रहा है। गढ़वाली गीतों में पुत्र को 'देवताओं की छाया'' कहा गया है। इस अवसर पर गये जाने वाले एक लोकगीत की यह भावना इस प्रकार व्यक्त हुई है —

पैलो धरती उपजे अगास
तब उपजे बीज पौन पाणी
महादेव घर बेटा उपजे, सूर्ज के घर उपजे कर्ण राजा
नन्दू के घर नारैण जरमे (जन्मे)
बालक जन्मे देवताहों का जायो।

मांगल गीतों में वर-वधू को शिव-पार्वती अथवा राम-सीता कहा गया है। ऐसे शुभ अवसरों पर गीत के स्तर में मुखर हो पाते हैं।''गढ़वाल के मांगल गीत विवाह की विभिन्न क्रियाओं और अनुष्ठानों से सम्बन्धित है तथा वर तथा वधु दोनों के घर में गाये जाते हैं। उनकी गायिकायें या तो कुल वधुऐं होती हैं या आवजी-वादकों की कुल लक्ष्मीयाँ, जिन्हं मंगल्यानी कहकर पुकारा जाता है।'' सामान्यत: ये मांगलगीत वेदी चिनते, चौक पूरते, मंगल स्नान करते, वस्त्राभूषण पहनते, स्तम्भ पूजा करते, बारात का स्वागत करते, तिलक लगाते, पाहुनों को जिमाते, भावरें फेरते बारात विदा करते और वधु को गृह-प्रवेश कराते गाये जाते हैं। विवाह के प्रारम्भिक अनुष्ठान में देवताओं की स्तुति से सम्बन्धित मांगल गीत गाये जाते हैं।''मांगल गीतों में ''सगुन'' बोलने के लिए कौवे का उल्लेख आया है, यह गीत संगीत की दृष्टि से मांगलगीतों में उल्लेखनीय है, यह अनिबद्ध गीत है, गीतान्तर्गत ताल का कोई बन्धन नहीं है। ढोल-दमों अपनी स्वतन्त्र लय में बजते हैं। जिसका गीत एवं स्वरबद्ध रचना निम्नलिखित है—

गीत

बोल कागा-चौ दिशा सगुने, त्वै धूलो कागा मैं दूद भाती,
बोल कागा चौ दिशी, सगुनो, त्वै धूलो कागा दही भात पूड़ी
रूप की टोटंणी, तू चौदिशी सगुन भेज

रे - म म ध म - - - - - -
बो ऽ ल का ऽ गा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
ध - प मरे म - ध प - - - - - -
चौ ऽ दि शीऽ सऽ गु न ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
भरे - म मप - भरे - - - - - -
बोऽ ऽ ल काऽ ऽ गाऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
प - मरे रेम म प म - - - - - -
चौ ऽ दिऽ शीऽ स गु न ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।।''

शेष सभी पंक्तियाँ इसी धुन पर आधारित है। गीतान्तर्गत रे म प ध चार स्वरों की प्राप्ति होती है।

स्वर, लय ताल, नृत्य एवं वाद्य की दृष्टि से

मांगल गीत

जौ जस देई खोली का गणेशा

जौ जस देई खोली का नारेण

जौ जस देई पंचनामा देवा

जौ जस देई भूमिका भूमियाला

राग–पहाड़ी, ताल – दीपचन्दी

प	–	–	ध	–	सां	–	ग	–	–	रे	–	–	–
जौ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	स	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	रे	सा	–	ध़	सा	ग	–	रे	रे	–	–	–
खो	ऽ	ली	का	ऽ	ऽ	ग	णे	ऽ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			2				0			3			
प	–	–	ध	–	सां	–	ग	–	रे	ध़	–	सा	–
जो	ऽ	ऽ	ज	ऽ	सा	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रे	सा	ध़	–	सा	–	ग	रे	सा	ध़	–	सा	
खो	ऽ	ली	का	ऽ	ऽ	न	रे	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	–	–											
ऽ	ऽ	ऽ											

इस मांगल गीत में भगवान गणेश जी, नारायण जी तथा अन्य देवताओं से आग्रह किया गया है कि हमारे कार्य शुभ सम्पन्न हो, यह मांगल गीत राग पहाड़ी पर आधारित है जिसमें प्राय: दीपचन्दी ताल का प्रयोग हुआ है। पहाड़ी प्रान्त की लोकधुन को संगीत विद्वान राग नियमों में व्यवस्थित करके शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गाते बजाते हैं।

इसी प्रकार हमारे ये सभी गीत लोकगीत के अर्न्तगत आते हैं। ''कुमार गन्धर्व ने लोक संगीत की विशेषतायें इस प्रकार निर्दिष्ट की है लोकभाषा के गीत सरल एवं भावपूर्ण होते हैं। उनकी लोक धुने लयबद्ध होती है। स्वर रचना भावों और प्रसंगों के अनुकूल होती है। एक ही धुन में अनेक गीत होते हैं। जो लय तथा गीत के बोलों के परिवर्तन द्वारा भिन्न हुआ करते हैं।'' गढ़वाल क्षेत्र के मांगलिक लोकगीतों में शास्त्रीयता निहित है। लोकधुनों में हमें रागों की छवि स्पष्ट दिखाई देती है। जिनमें राग पहाड़ी, देस, दुर्गा, शिवरंजनी, भूपाली, मालकौंस, धानी, जोगकौंस, मिश्र खमाज, केदार, गोरख कल्याण, काफी, मल्हार, दरबारी के राग रूप गढ़वाल के मांगलिक लोकगीतों में प्राप्त होते हैं। दुर्गा, भूपाली, पहाड़ी एवं मालकौंस राग की बहुलता पाई जाती है।

मांगल गीतों के साथ विवाह की रस्मों में सर्वोपरि कन्यादान से सम्बन्धित गीत ''दे देवा बबजी कन्या को दान'' के स्वर लोक में इस प्रकार प्राप्त होते हैं –

राग दुर्गा – दीपचन्दी ताल

x			2				0			3			
ध	–	–	सा	–	सा	–	रे	म	–	म	–	–	–
दे	ऽ	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	व	व	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	–	म	–	म	–	प	प	प	प	–	ध	–

दे	ऽ	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	व	व	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
ध	प	–	प	–	ध	म	(म)	–	म	म	–	–	–
क	ऽ	ऽ	न्या	ऽ	को	ऽ	दा	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ध	–	ध	–	ध	न	ध	–	ध	ध	–	प	प
दे	ऽ	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	व	व	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	–	म	–	रे	–	म	–	–	प	–	म	–
क	ऽ	ऽ	न्या	ऽ	को	ऽ	दा	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ह	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			2				0			3			

शेष सभी पंक्तियाँ इसी स्वरावली पर आधारित है। जिसमें ध सा रे म प ध स्वर प्राप्त हो रहे हैं जो दुर्गा राग के समीपस्थ दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार विवाह के मांगलिक गीत होते हैं, फेरे लेते समय भी गीत गाये जाते हैं। पुत्र जन्म समय हो या ईष्ट को प्रसन्न के गीत ये सभी लोकसंगीत के गीत हैं, जिनमें शास्त्रीयता की झलक हमें देखने को मिलती है।

उपर्युक्त अध्ययन से हम यह निष्कर्ष प्राप्त करते हैं कि भावना एवं विश्वास के फलस्वरूप गढ़वाल क्षेत्र के गीतों में हिन्दू धर्म भावना व्याप्त है। किन्तु वर्तमान में ये मांगलिक गीत कहीं न कहीं धूमिल हो रहे हैं। गढ़वाल की संगीत कला मानव हृदयों से निकलकर यहाँ के वाद्य-यंत्रों से अनुप्रमाणित होकर, यहाँ के लोकजीवन में बल, साहस और प्रेरणाओं का संचार युगों युगों से करती चली आ रही है। अत: हमें चाहिये कि हम अपने पारम्परिक मांगलिक लोकगीतों को अपनायें, जो परम्परा है, उसको आगे बढ़ाये। क्योंकि लोकगीत जनमानस के स्वाभाविक उद्‌बोधनों का नैसर्गिक प्रस्फुट है। ''जहाँ कवि रवीन्द्र ने लोकगीतों को संस्कृति का सुखद सन्देश ले जाने वाली कला कहा है। वहीं महात्मा गाँधी ने लोकगीत ही जनता ही लोकगीत की भाषा है लोकगीत ही हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं।' कहकर लोकगीतों के महात्म्य को परिभाषित किया है।'' वर्तमान समय में अनेक गायक-गायिकाओं द्वारा निम्न स्तरीय गढ़वाली शब्दों के प्रयोग अर्थविहिन गीतों के प्रयोग के कारण गढ़वाली गीतों का स्तर गिरता जा रहा है। जिससे पुरानी संस्कृति से आधुनिक वर्ग के लोग अनभिज्ञ है। हमारी संस्कृति पर पाश्चात्य संगीत का गहरा असर पड़ा है। टी.वी. आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि पर एलबम का प्रार्दुभाव छाया हुआ है। गढ़वाल के लोकसंगीत को संरक्षित करने हेतु संगीत नाटक अकेडमी की स्थापना होनी चाहिये। जहाँ पारम्परिक रीति रिवाजों को जानने वाले कलाकारों के द्वारा मांगलिक लोकगीतों का प्रचार-प्रसार हो। सरकार, समाज तथा स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा लोकसंगीत कलाकारों को मान-सम्मान तथा उचित आर्थिक सहायता दी जानी चाहिये। पारम्परिक गीतों की स्वरलिपी तैयार कर उसे लाईब्रेरी में संरक्षण मिलना चाहिये ताकि संगीत प्रेमी उसे पढ़ कर गीतों को जान सके।

निष्कर्ष रूप में लोकगीत ही शास्त्रीय संगीत का मूल है, संस्कृति एवं संस्कार के दर्पण है। इन्हें संरक्षित करना हमारा कर्तव्य है। हमें चाहिये कि हम अपने दैनिक जीवन में गढ़वाली भाषा का संवर्द्धन करें, तभी हमारी संस्कृति विश्व के मानस पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ेगी।

पाद-टिप्पणियाँ

1. शर्मा, योजना - राजस्थानी लोगीतों की संरचना, पृ. 1
2. बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद - उत्तराखण्ड समग्र ज्ञान कोश, पृ. 305
3. वही, पृ. 278-279
4. जोशी, घनश्याम - उत्तराखण्ड का राजनीतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 183
5. वही, पृ. 183
6. शर्मा, योजना - राजस्थानी लोगीतों की संरचना, पृ. 33-34
7. ममगाई, शिखा, सहगल डॉ. सुधा - पौडी गढ़वाल के लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. 86
8. मैठानी, तुष्टि - भारतीय आद्यात्मिक पृष्भूमि में गढ़वाली लोक संगीत, पृ. 291

9. चातक, गोविन्द - भारतीय लोकसंस्कृति का संदर्भ : मध्य हिमालय, पृ. 129
10. ममगाई, शिखा, सहगल सुधा - पौडी गढ़वाल के लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. 90
11. मैठानी, तुष्टि - भारतीय आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में गढ़वाली लोक संगीत, पृ. 229-230
12. ममगाई, शिखा, सहगल सुधा - पौडी गढ़वाल के लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. 127
13. वालिया, दीपिका - संगीत कला के विविध आयाम, पृ. 9
14. मैठानी, तुष्टि - भारतीय आद्यात्मिक पृष्भूमि में गढ़वाली लोक संगीत, पृ. 236-237
15. शर्मा, लवली - राजस्थानी लोकगीतों की शास्त्रीयता, पृ. 28

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा, योजना - राजस्थानी लोकगीतों की संरचना, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, प्रथम संस्करण, 2000

बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद - उत्तराखण्ड समग्र ज्ञान कोश, विनसर पब्लिशिंग कं., देहरादून, प्रथम संस्करण-2008

जोशी, घनश्याम - उत्तराखण्ड का राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, प्रथम संस्करण-2003

ममगाई, शिखा, सहगल डॉ. सुधा - पौड़ी गढ़वाल के लोक संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006

मैठानी, तुष्टि - भारतीय आद्यात्मिक पृष्ठभूमि में गढ़वाली लोकसंगीत सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006

चातक, गोविन्द - भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ : मध्य हिमालय, 1996, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

वालिया, दीपिका - संगीत कला के विविध आयाम, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2012

शर्मा, लवली - राजस्थानी लोकगीतों की शास्त्रीयता, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2004